पेपर – CC-05

मुस्लिम काल में संगीत

डॉ0 सारिका पटेल

संगीत विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

मुसलिम काल में भारतीय संगीत को कई उतार–चढ़ाव से गुजरना पड़ा। भारत देश समृद्धशाली होने के कारण ही इस पर कई विदेशी लोगों ने आक्रमण करने शुरु कर दिये। इनके आक्रमण का मुख्य उद्देश्य भारत को लूटना था। मोहम्मद गज़नवीं ने भारत पर चार बार आक्रमण किए। सन् 1025 ई0 में मुहम्मद गज़नवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया। जिसके कारण भारत की धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विरासत नष्ट होने लगी। इस प्रकार भारतीय सभ्यता का प्रमुख अंग संगीत भी उसकी चपेट में आ गया। हिन्दुस्तान पर मुसलमान राजाओं की विजय से यहाँ के संगीत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल आरंभ हुआ। इसी समय से विशुद्ध भारतीय कलाओं और विद्वानों के पतन का श्रीगणेश हुआ। भारतीयों का जीवन अस्त–व्यस्त और दुखदायी हो गया। इन आक्रमणकारियों के साथ इनके मनोरंजन के लिए कुछ संगीतज्ञ भी इनके साथ आए। इन संगीतज्ञों के द्वारा लाए गए विदेशी संगीत और भारतीय संगीत के मेल से भारतीय शास्त्रीय संगीत में अनेक मूलभूत परिवर्तन हुए, जैसे मूर्छना पद्धति के स्थान पर मेल पद्धति का प्रचलन, षडज्–पंचम की अचलता एवं किरानी संगीत के 12 मुकाम के आधार पर 12 स्वरों का प्रचलन अर्थात् भारतीय प्राकृत स्वरों में भी परिवर्तन होने लगा। अतः साहित्य और संगीत का आध्यात्मिक वातावरण श्रृंगारिक प्रवृत्ति में बदल गया। परंतु इतना सब होने के बाद भी 11वीं शताब्दीं से लेकर 18वीं शताब्दीं तक में बहुत सारे सांगीतिक ग्रंथों, वाद्यों और रागो की रचना की गई। कुछ विद्वानों के अनुसार भारतीय संगीत में हानि होने लगी, परंतु यथार्थ में देखा जाय तो भारतीय संगीत ने उन्नति की, जिसका मूल आधार प्राचीन भारतीय संगीत ही रहा है।

11वीं शताब्दी के लगभग मुसलमानों का हमारे देश में आगमन आरंभ हुआ। इसे मुसलिम प्रवेश काल भी कहा गया है। मुसलिम काल का प्रारंभ 11वीं शताब्दीं से लेकर 15वीं शताब्दीं के मध्य को माना जाता है। मुसलिम काल में संगीत राजदरबारों के साथ–साथ आम लोगों के बीच भी खूब लोकप्रिय हुआ था। आम जन संध्या तथा प्रातः के साथ–साथ अन्य मांगलिक अवसरों पर, पर्व तथा त्यौहारों आदि पर संगीत का आयोजन करते थे। मुसलिम काल में

संगीत की स्थिति का ज्ञान हमें इन दो कालों का अध्ययन करने से प्राप्त होता है। जिसमें पहला है दिल्ली सल्तनत काल और दूसरा है मुगल काल।

दिल्ली सल्तनत काल में संगीत :– इसके अंतर्गत प्रमुखतः तीन काल खंड आते है।

1. खिलजी काल
2. तुगलक काल
3. लोदी काल

खिलजी काल(सन् 1294–1320 ई0)– 19 जुलाई सन् 1296 ई0 को अलाउद्दीन फिरोज खिलजी गद्दी पर बैठे। अलाउद्दीन संगीत–प्रेमी बादशाह थे, अतः उन्होंने संगीत के प्रचार एवं प्रसार में बड़ा योगदान दिया। यह पहले मुसलिम बादशाह थे, जिन्होंने संपूर्ण उत्तर–भारत को अपने अधिकार में कर लेने के बाद दक्षिण–भारत की विजय की ओर ध्यान दिया। उनके सेनापति मलिक काफूर दक्षिण भारत पर विजय प्राप्त किये। उस समय दक्षिण–भारत के अनेक संगीतज्ञों को शाही सेना के साथ उत्तर भारत में लाकर बसाया गया। इन्हीं संगीतज्ञों में से एक नामी संगीतज्ञ गोपालनायक थे, जो छन्द प्रबन्ध के ज्ञाता माने जाते थे। कहा जाता है कि ये दक्षिण भारत के रहने वाले थे, जिन्हें बलपूर्वक दिल्ली लाया गया था। विद्वानों के कथनानुसार ये दिल्ली के दरबारों में भारतीय संगीत के गूढ़ रहस्यों को उजागर नही किये।

अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में अमीर खुसरों नामक एक फारसी कवि एवं संगीतज्ञ प्रमुख रत्नों में से थे। जो खिलजी वंश के कई सुल्तानों के महामंत्री थे, इन्होंने भारतीय संगीत को समृद्ध करने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। इन्होंने कई नए रागो को इज़ाद किया जिनमें साजगिरी सरपरदा, यमन कल्याण, रात की पूरिया, पूर्वी इत्यादि। इन्हें फरोदस्त, पश्तो, सवारी, आड़ाचौताल, झूमरा आदि तालो का अविष्कारक भी माना गया है। खुसरों ने कई वाद्यों को उन्नत किया, कई विद्वान इन्हें तबला तथा सितार का अविष्कारक भी मानते है। इन्होंने कई नई गायन शैलियों को भी प्रचलन में लाया। ये गोपाल के गायन को सुनकर 'कव्वाली' तथा 'तराना' नामक शैली को जन्म दिये। इन्हें कौल, कलवाना, तराना, गज़ल तथा कव्वाली आदि का अविष्कारक माना जाता है। अमीर खुसरो जितने भी सुल्तानों के यहॉ रहे सभी सुल्तान संगीत प्रेमी एवं संगीत के संरक्षक के रुप में याद किये जाते रहेंगे। कुछ सुल्तानों ने संगीत को वर्जित कर रखा था, लेकिन कुछ ने जैसे जलाउद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक अपने दरबारों में संगीत की गोष्ठियां करते रहते थे। सैयद सुल्तान मुबारक साह इस कला के विशेष प्रेमी थे। कुछ सूफ़ी संत जैसे अज़मेर के मोइनुद्दीन भी संगीत प्रेमी होने के कारण संगीतज्ञों को संरक्षण देते थे।

इसी कालखंड में जयदेव ने ''गीतगोबिन्द'' की रचना की जो राधा कृष्ण के श्रृंगार पर आधारित गीतिकाव्य है जो अष्टपदी के नाम से प्रसिद्ध है। इसके प्रत्येक पदों पर राग और

ताल का नाम लिया गया है। पंडित शारंगदेव ने ''संगीत रत्नाकर'' की रचना की। ये ग्रंथ उत्तरी और दक्षिणी दोनों पद्धतियों का आधारभूत संगीत ग्रंथ है।

अलाउद्दीन फिरोज खिलजी के बाद गुलाम वंश के द्वितीय सुल्तान अल्तमश की पुत्री रजिया सुल्तान को संगीत से बड़ा प्रेम था। वह विद्वानों तथा संगीतज्ञों का बहुत आदर करती थी। उसके दरबार में श्रेष्ठ संगीतज्ञ रहा करते थे। वह उन्हें यथोचित पुरुष्कार भी देती थी। इस प्रकार इस युग में संगीत का अच्छा विकास हुआ।

तुगलक काल (सन् 1320–1414 ई0)– सन् 1320 ई0 में गयासुद्दीन तुगलक गद्दी पर बैठे। उस समय सम्राज्य की स्थिति छिन्न–भिन्न होने के कारण उन्हें अपनी संपूर्ण शक्ति शासन व्यवस्था को ठीक करने में लगानी पड़ी। अतः उन्हें संगीत तथा अन्य कलाओं के विकास की ओर ध्यान देने का अवसर ही नही मिला। संगीत में विशेष रुचि न होने के कारण भी इनके समय में संगीत विकास की ओर अग्रसर न हो सका। 1325 ई0 में गयासुद्दीन तुगलक के पुत्र मुहम्मद तुगलक गद्दी पर बैठे। मुहम्मद तुगलक संगीत प्रेमी थे। वे कलाओं में विशेष रुचि रखते थे। इनके विस्तृत सम्राज्य में प्रान्तीय संगीत समारोह बराबर चलते रहते थे। संगीत प्रदर्शन के साथ ही संगीत शास्त्र पर भी चर्चा हुआ करती थी। भारतीय जनता का जीवन पूर्ण संगीतमय हो रहा था। संगीत प्रधान नाटकों का खूब प्रचार था। इस काल में सर्वप्रथम नगरीय और ग्रामीण संगीत में दीवार सी बननी प्रारंभ हो गई थी। स्त्रियों को भी संगीत प्रिय था परंतु पर्दा प्रथा होने के कारण स्त्रिया सार्वजनिक संगीत समारोहो में भाग नही लिया करती थी। नारियों में संगीत का विकास अवरुद्ध सा हो गया था। इस प्रकार तुगलक काल में संगीत का विकास बहुत ही न्यून मात्रा में हुआ।

लोदी काल (सन् 1414–1526 ई0)– तुगलक काल के बाद लोदी काल का प्रारंभ होता है। दिल्ली में सुलतान शासक संगीत की अवहेलना नही किये। सिकंदर लोदी जैसा कट्टर पंथी भी संगीत का प्रेमी था। यद्यपि सिकन्दर लोदी को संगीत का ज्ञान कुछ भी नही था, परंतु वह एक योग्य शासक था। वह विद्वानों का आदर करता था। इसके शासन काल में भारतीय संगीत की उन्नति हुई, जनता में भी संगीत के प्रति बड़ा उत्साह था। गज़ल और ख्याल गायकी अधिक बने। इस काल में मुसलिम कलाकार इस प्रयत्न में थे कि जिस संगीत पद्धति को वे अरब से लाए है, उसे ही भारतीय वातावरण में ढ़ाला जाए ताकि उनका मान–सम्मान और प्रधानता शासन में स्थिर रही आए। परंतु हिन्दू कलाकार अब इस पक्ष में नही थे कि भारतीय संगीत को और अधिक बिगाड़ा जाय। वे संगीत का विकास उसके मौलिक सिद्धान्तों के साथ चाहते थे।

अन्त में यही निश्चित हुआ कि भारतीय संगीत के यथार्थ रुप की रक्षा की जाय। इस प्रकार लोदी काल में विदेशी संगीत के मेल से भारतीय संगीत में कुछ परिवर्तन होने के वावजूद भी

वह अपनी कला संस्कृत के स्वरुप को ही सर्वोपरि रखता रहा। भारतीय संगीत ने अपनी मौलिक मर्यादा को नही छोड़ा।

इसी काल में जौनपुर के सुल्तान हुसैनशर्की ने कलावंती ख्याल को प्रचारित किया। इन्होंने जौनपुरी, तोड़ी, सिन्धुभैरवी तथा सिंदूरा आदि रागों को प्रचलन में लाया। इन्होंने भारतीय संगीत को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी कालखंड में प्रबंध गान के स्थान पर ध्रुपद गायन का विकास हुआ साथ ही साथ कव्वाली, पौल, नुस्क, गुल सौजरवानी तराना कलावंती ख्याल आदि का प्रचलन हुआ, जिससे भारतीय संगीत समृद्ध हुई।

मुगल काल में संगीत :– मुगल काल का आरंभ बाबर से माना जाता है। यह काल 16वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक माना जाता है।

बाबर–

इस काल में मुगलो का प्रथम बादशाह बाबर था। बाबर एक वीर योद्धा होने के साथ ही अच्छा संगीतज्ञ भी था। वह गाने में प्रवीण था और गायकों का सम्मान भी करता था। वह श्रेष्ठ गाने वालो का सम्मान भी करता था। उसे अरेबियन और तुर्की नृत्य अत्यन्त प्रिय थे। जब वह भारत पर आक्रमण किया तो वह अपने साथ संगीतज्ञों को भी साथ लेकर आया था। उसका विश्वास था कि संगीत में एक ऐसी शक्ति है कि इससे मानव के हृदय को सहजता से परिवर्तित किया जा सकता है। इसके काल में संगीत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा था। वह संगीत को केवल मनोरंजन की वस्तु मानता था जिससे इसमें श्रंगारिकता प्रवेश कर गई।

इस काल में भारतीय विदेशियों के हमले से पीड़ित होकर परमात्मा की भक्ति में लीन हो गए, जिससे भक्ति आंदोलन ने जोर पकड़ा और कबीर, रामानन्द और चैतन्य महाप्रभु जैसे भगवद्भक्तों के द्वारा संगीत का प्रचार–प्रसार भजन–कीर्तन के द्वारा हो रहा था। इस प्रकार संगीत को महान शक्ति प्राप्त हो रही थी और उसका आत्मिक सौंदर्य निखरकर सामने आ रहा था। इस काल में ख्याल तथा कव्वाली के साथ–साथ भजन–कीर्तन भी विकास की ओर अग्रसर हो रहे थे।

हुमायूँ–

बाबर के बाद उसका पुत्र हुमायूँ गद्दी पर बैठा। हुमायूँ को संगीत बड़ा प्रिय था, वह मरते समय तक संगीत का महान उपासक बना रहा। उसे वही संगीत अधिक प्रिय थे, जिनमें आत्मा और परमात्मा के दिव्य रुप पर प्रकाश डाला गया हो। वह संगातज्ञों का आदर किया करता था।हुमायूँ के समय में सूफ़ी मत का अधिक प्रचार हुआ था। सूफ़ी कवियों ने भी अपनी

रचनाओं का संगीत के माध्यम से प्रचार किया। इसके शासनकाल में कर्नाटक के प्रसिद्ध ग्रंथकार रामामात्य जी ने ''स्वरमेल कलानिधि'' की रचना की।

राजामानसिंह तोमर–

ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर संगीत के कुशल विद्वान थे। इन्होंने मान–कौतुहल नामक ग्रंथ का संकलन कराया था। इसी का फारसी में अनुवाद 'राग दर्पण' नाम से फकीरउल्ला ने किया। मानसिंह तोमर ने ध्रुपद शैली का विकास किया। इन्होंने 'मान–कुतुहल' नामक ग्रंथ का संकलन कराया था, जिसका फारसी में अनमवाद 'राग दर्पण' में फकीरुल्ला ने किया। राजा मानसिंह तोमर कलाकारों का बड़ा सत्कार करते थे। उनके दरबार में अनेक संगीतज्ञ थे, उन्ही में स्वामी हरिदास के शिष्य बैजू बाबरा नामक संगीतज्ञ हुए। बैजू उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध गायक थे, साथ ही उनका वीणावादन पर भी उत्तम अधिकार था। उन्होंने अनेक लोकप्रिय गीत व ध्रुपद लिखे। ग्वालियर की पृष्ठभूमि को संगीतमय बनाने में बैजू का क्रियात्मक हाथ रहा। उनकी प्रकृति बड़ी सरल और सादा थी। बैजू के संगीत से प्रभावित होकर राजा मानसिंह तोमर ने उन्हें अपनी पत्नी मृगनयनी के संगीत शिक्षक के रुप में नियुक्त किया। मृगनयनी गूजर जाति की कन्या थी। इनके नाम पे इन्होंने गुर्जरी तोड़ी तथा मंगल गुर्जरी राग बनाए। इस युग में स्त्रियां भी संगीत कला में निपुण थी। घर–घर में संगीत की स्वर लहरियां झंकृत होती थी। संगीत के क्षेत्र में सार्वजनिक संगीत समारोह व प्रतियोगिताएं होती थी। जिनमें बाहर के भी अनेक कलाकार भाग लिया करते थे।

अकबर –

अकबर एक अच्छा शासक होने के साथ–साथ संगीत प्रेमी भी था। अकबर के शासनकाल में उत्तर भारतीय संगीत में ईरानी और अरबी के मिश्रित प्रभाव से अद्भुत निखार आया। लेकिन दक्षिणी संगीत इस प्रभाव से अछूता रहा। दक्षिणी संगीत अपने प्राचीन रुप में ही रहा। इस प्रकार इस काल के भारतीय संगीत की दो धाराए सम्मुख आती है पहली धारा उत्तर भारत में मुसलिम संस्कृति की पृष्ठभूमि पर बह रही थी और दूसरी धारा दक्षिण भारत में अपने प्राचीन रुप को लिए हुए प्रवाहित हो रही थी। इन्हीं के शासन काल में अबुल फजल ने 'आइने अकबरी' पुस्तक लिखी। इस पुस्तक के अनुसार अकबर के दरबार में 36 संगीतज्ञ थे। जिनमें स्वामी हरिदास, बैजू, तानसेन, गोपाल खाँ, बाबा रामदास, नायक बक्सू, सुजान खाँ, विलास खाँ, लाल खाँ, बृजचन्द्र, श्रीचन्द्र, बाबा मदनराय आदि का नाम उल्लेखनीय है। इस काल के प्रसिद्ध संगीतज्ञ बृंदावन निवासी स्वामी हरिदास थे। इनके शिष्यों में उच्च कोटि के शिष्य बैजू बाबरा और तानसेन शामिल थे।

इसी कालखंड में भक्ति आंदोलन की भी शुरुआत हुई। भक्ति आंदोलन में आम जनता को भक्ति के बुनियादी तत्वों का ज्ञान प्रचारको के द्वारा संगीत के माध्यम से उपदेश देकर किया

जाता था। इस काल के प्रसिद्ध कवि एवं संगीतज्ञ सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास तथा मीराबाई हुए। इनके द्वारा गाए गीत तथा भजन रचनाए आज भी आम जनता में प्रचलित है। जिनमें मीराबाई की 'मीराबाई की मल्हार' , तुलसीदास की 'रामचरित मानस' ,सूरदास की 'सूरसागर, सूरसूरावली, साहित्यलहरी' आदि प्रमुख है। इसी समय दक्षिण के संगीतज्ञ पुन्डरीक विट्ठल ने चार प्रमुख ग्रंथों रागमाला, रागमंजरी, सद्राग चन्द्रोदय तथा नर्तक निर्णय की रचना की। हृदय नारायण ने हृदय कौतुक तथा हृदय प्रकाश की रचना की।

अकबर के काल को भारतीय संगीत का स्वर्ण काल कहते है, क्योंकि इस काल में भारतीय संगीत की लगभग सभी धाराओं का विकास सुचारु ढंग से हुआ।

जहाँगीर–

अकबर की मृत्यु के बाद उनके पुत्र जहाँगीर गद्दी पर बैठे। वह भी अपने पिता अकबर के समान ही कला और साहित्य के प्रेमी थे। उन्हें सितार वादन बहुत प्रिय था। जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ की भी संगीत में विशेष रुचि थी। इनकी संगीत प्रियता के कारण इनके दरबार में बिलास खाँ, छत्तर खाँ, परवेजदाद, खुर्रमदाद, मक्खू हमजाद, जहाँगीर दाद इत्यादि अनेक उत्तम संगीतज्ञ थे। इसी काल में पं0 सोमनाथ ने 'राग विवोध' नामक ग्रंथ लिखा।

शाहजहाँ–

जहाँगीर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र शाहजहाँ सन 1628 ई0 में गद्दी पर बैठा। यह अपने पिता की तरह ही संगीत में निपुण थे। इनके काल में जितना संगीत का विकास हुआ उतना जहाँगीर काल में नही हुआ। वह संगीत सम्मेलन और संगीत सम्मेलन भी कराया करता था और उत्तम कलाकारों को पुरुष्कार भी देता था। दरबारी संगीत में वह मुसलिम कलाकारों की तरह ही हिन्दू कलाकारों को भी सम्मान के साथ बुलाया करता था। इस काल में पूर्वी भारत में 'अचल' नाम का एक पूर्ण संगीतमय बड़ा मेला हुआ करता था। इसमें दूर–दूर से संगीतज्ञ एकत्र हुआ करते थे। शाहजहाँ ने दरबारी गायक दैरंगखाँ तथा लाल खाँ को 'गुणसमुद्र' की तथा विद्वान जगन्नाथ को 'कविराज' की उपाधि प्रदान की। इस काल में भारतीय संगीत में नवीन रागों का निर्माण किया गया। इस काल में भारतीय संगीत का विकास तो अधिक हुआ, परंतु संगीत की शुद्धता से अधिक कण्ठ में मिठास और ध्वनि की मधुरता पर बल दिया गया।

औरंगजेब–

औरंगजेब जब गद्दी पर बैठे तो वह मनुष्यों को चरित्रवान देखना चाहते थे। दुर्भाग्यवश वह जिस संगीत के संपर्क में आए, उसमें उन्हें विलासिता और चरित्रहीनता दिखाई दिया। इस प्रकार वह संगीत के बड़े अुश्मन बन गए। संगीत पर पाबंदी लगा दी गई। इसी समय दक्षिण

के संगीतज्ञ पं0 व्यंकटमखी ने 'चतुर्दन्डिप्रकाशिका' ग्रंथ की रचना की। लगभग इसी समय भावभट्ट ने तीन ग्रंथ अनूप संगीत रत्नाकर, अनूप विलास तथा अनूपांकुश लिखा।

मुहम्मदशाह रंगीले–

औरंगजे के बाद मुहम्मदशाह रंगीले वे अन्तिम बादशाह थे, जिनके दरबार में प्रसिद्ध संगीतज्ञों को राजाश्रय मिला। इस समय के संगीत में हिन्दू एवं फारसी संगीत का मिश्रण था। इनके दरबार में प्रसिद्ध संगीतज्ञ नियामत खाँ सदारंग एवं इनके भाई अदारंग थे। अन्य संगीतज्ञों में गुलाम रसूल, मक्खन, तीथू, मिट्ठू, उमराव खाँ, खुशाल खाँ, छज्जू खाँ, प्यारे खाँ आदि अनेक उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। इसी समय प्रसिद्ध गायिका शोरी एवं इनके पति गुलाम नबी ने 'टप्पा' गायन शैली को खूब आगे बढ़ाया। शोज, मरसिया, त्रिवट, तराना, रेखता, क़ौल, कलबाना तथा गुलनक्श इत्यादि प्रकार के गायन का प्रचार भी इसी काल में हुआ।

इस प्रकार हम देखते है कि इस काल में भारतीय संगीत ने अपनी मौलिक मर्यादा को कभी नही छोड़ा, यद्यपि उस पर अनेक रंग चढ़ाए गए , कई प्रकार की पॉलिश की गई, कई साँचो में ढ़ाला गया, परंतु फिर भी भारतीय संगीत अपनी उज्जवलता के साथ अपने माधुर्य सौंदर्य को न छोड़ सका। इसका श्रेय भरतीय संगीतज्ञों और भक्त कवियों को जाता है, जिनके कारण संगीत की धारा अच्छन्द बनी रही और निरंतर अपने विभिन्न स्वरुपों के साथ प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होती रही।